लॉकडाऊन का मनुष्य, पशु एवं वातावरण पर प्रभाव

जिनसे है दुनिया ,वही है आज दुनिया से दूर।

आज पूरा विश्व एक डरावने सन्नाटे का शिकार बन चुका है। अमीर हो या चाहे कोई गरीब देश कोई कोरोना जीवाणु द्वारा फैलाई इस महामारी के चंगुल से नहीं बच पाया है। हम सब चारदीवारी में रहने के लिए विवश है और यही समय की ज़रूरत भी है । ये तो समय का चक्र है, जिसने सबको काबू कर रखा था , आज वही महज़ एक जीवाणु के समक्ष लाचार है ! पूरे विश्व में कई जानें जा चुकी है, रोशनी होते हुए भी पूरा विश्व एक अंधेरे में है और हालात सुधरने का नाम नहीं ले रहे, इसे तृतीय विश्व युद्ध कहें तो गलत नहीं होगा , अंतर केवल इतना है की हम ही योध्दा हैं और युद्ध भी हमी से है।

“सारे विश्व में है लॉकडाउन जैसी आपातकालीन स्थिति,
नेताओं का निर्णय है सही , ताकि और ना बिगड़े
परिस्थिति”।

आज मानव जीवन थम सा गया है ! स्कूल, कॉलेज, ऑफिस सब बंद है ,सड़कें खाली है, यातायात के सारे साधन ठप है, व्यापार रुक गए हैं, ज़रूरी वस्तुओं की तंगी है , गरीब भूखे सोने पर मजबूर है, किसानों की फसले तैयार है ,पर कटाई के लिए मजदूर नहीं है और ऐसा ही रहा तो अनाज के लाले पड़ना , कोई अचम्भा की बात नहीं होगी।

“कुछ इस कदर फैली है ये महामारी ,
भूखा सोया एक दिहाड़ी कर्मचारी
विद्या के मंदिर सुने पड़े ,
अस्पताल मरीज़ों से भरे पड़े ,
चारों ओर सन्नाटा छाया
इस कदर जीवाणु ने अपना प्रभाव फैलाया”

लॉकडाउन का बहुत ही गहरा असर किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर है। कोई काम नहीं हो रहा इसलिए समाज एवं देश का विकास थम चुका है और आने वाले समय में इसके परिणाम स्वरूप ,भले ही कोई देश कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, क्षति होना तो स्वभाविक है।

“जान है तो जहान है” सही कहा माननीय प्रधानमंत्री जी ने इसलिए आज हम अपनी जान बचाने के लिए सब कार्य छोड़ घर पर सुरक्षित है, पर अपनी जान की परवाह किये बिना इस मुश्किल समय में चिकित्सक, परिचारिका, सफाई कर्मचारी एवं सुरक्षाकर्मी दिन रात डूबते हुए संसार को बचाने की कोशिश में लगे है। परंतु इस बीच भी कई शरारती तत्व आतंक फैलाने से नहीं कतराते। मजहब एवं जाति के नाम पर दंगे किये जा रहे हैं, तो कभी सरकार के आदेश का निरादर, ये स्वभाविक रूप से गलत है और वक़्त की ज़रूरत है ऐसे अभद्र लोगों की बातों में ना

आना और इस अंधेरे रूपी महामारी से विश्व को मुक्ति दिला एक नए प्रकाश का स्वागत करना।

“हमारे योध्दाओं की मेहनत न जाए बेकार ,

घरों से तुम ना निकलना बाहर”

ये तो इंसान की प्रवृत्ति है, सही से पहले ,गलत सोचना । भले ही आज सब रुक चुका है लेकिन इन सब मुश्किलों के बीच, आज , हमेशा से हमारी रविवार-जैसे दिन गुज़ारने की कामना पूरी हुई है! वो कहते है ना “देने वाला जब भी देता, देता छपड़ फाड़ के” तो आज वही हुआ है। लेकिन इस समय का सदुपयोग करना ज़रूरी है,इसे व्यर्थ ना गवाएं , क्योंकि समय तो रेत की भाँति हाथ से फिसलता ही जाता है। आज मौका मिला है , इस दिन-रात चलते संसार में कुछ पल निकाल कर, परिवार के साथ व्यतीत करने का , अपनी रुचियों को उभारने का ! विधार्थी घर पर ही पढ़ें, अपना और अपने बड़े-बूढों का ध्यान रखें। अकेले होकर भी हम सब इसमें अकेले नहीं

है। स्वयं तो हिम्मत हारें ही ना, ना अपने परिवार एवं साथियों को हिम्मत हारने दें ।

“व्यर्थ बैठे-बैठे इस समय न हो उबाऊ,

बनाओ इसे भी किसी ना किसी तरह उपजाऊ।

अपनी कोई रुचि करें विकसित,

यही है खुशियों और मन के स्वास्थ्य के लिए उचित”

ये कहना भी गलत नहीं होगा , की इंसान ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए बार बार धरती माँ को सताया है, निरंतर इस संपदा का दुरूपयोग ही किया है। हवा हो या जल के स्त्रोत , भूमि हो या फिर ध्वनि , इंसान ने हर एक अनमोल संपदा को अपने फायदे और कभी न खत्म होने वाली आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हमेशा दूषित ही किया है। इंसान ने तो दूसरे जीव जंतुओं को भी नहीं छोड़ा है , इन्हे भी अपने खान पान में शामिल कर इन बेज़ुबानों का निरंतर शोषण किया है , और आज अपने इन्ही कर्मों की सज़ा भी भुगत रहा है।

“हे मानव! सुधार अपनी गतिविधियां,

देख ली , आज असहाय धरती की प्रक्रिया ?

तेरा अकेले का नहीं है धरती पर अधिकार,

रख बेज़ुबानों का भी ध्यान, कर अपनी गलतियों का सुधार”

आज जहाँ सभी ओर बेबसी और लाचारी है और मनुष्य अपने कर्मों की सज़ा भुगत रहा है, धरती का उपचार हो रहा है। हवा शुद्ध है, नदियों के बहाव में अलग सी मस्ती है , पक्षियों का चहकना मानो और भी ज़्यादा मधुर हो उठा है । आज जानवर आज़ाद है और हम कैद है। हमारा ये समझना ज़रूरी है की सृष्टि केवल हमारी नहीं, हम इस सृष्टि का केवल एक भाग है । समय की ज़रूरत है स्वार्थ को कम करना और पारितंत्र में सदैव सबको साथ लेकर चलना , क्योंकि, जब-जब मानव अपराध में बढ़ोतरी हुई है ,तब-तब विनाश हुआ है। इस वर्ष तो पृथ्वी दिवस की पचासवी सालगिरह है , इस उपलक्ष पर पृथ्वी के लिए इससे बेहतर क्या होगा की हम

पृथ्वी द्वारा दिये गए निरंतर संकेतों को समझे, और इस अनमोल धरोहर की रक्षा करें क्योंकि अगर धरती है, तो हम हैं !

“इंसान है आज कैद,

धरती हुई है, दुष्कर्मों से आज़ाद ।

चिड़ियाँ है चहक उठी ,

धरती है महक उठी ।

वायु, जल , धरती एवं ध्वनि की हो रही है शुद्धि,

समय रहते तुम भी सुधारो अपनी बुद्धि।

धरती- माँ का हो रहा उपचार,

लालची मनुष्य है लाचार”

लॉकडाउन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हैं, परंतु उद्देशय कोरोना से लड़ना और उसे हराना ही है। इतने बड़े पैमाने पर एक देश को पूरी तरह बंद कर देना

न तो आसान है और न ही कोई खेल। स्थिति दयनीय है और आने वाले लंबे समय तक इसके प्रभाव देखने को मिलेंगे। यह समस्या बड़ी है तो इसका समाधान भी आसान नहीं है, धैर्य रखना ज़रूरी है । ऐसे संकट की घड़ी में सबको डट कर इसका सामना करना है। अपने सामर्थ्य अनुसार गरीबों की सहायता करें,सरकार के निर्देशों का पालन करें, घर पर रहें ,सुरक्षित रहें क्योंकि ना ये धर्म ना जाति ना धन दौलत देखता है ।यही बुद्धिमत्ता भी है, इसी तरह कोरोना को हराएं एवं लॉकडाउन को सफल बनायें। साथ ही आने वाले समय में धरती माँ को फिरसे प्रतिशोध के लिए मजबूर न करें और शांतिपूर्वक सभी जीवों के साथ रहें और सभी का आदर करें, क्योंकि जान तो जान है फिर वो चाहे मनुष्य की हो या जानवर की या फिर हम सबकी धरती माँ की , सिद्ध करें की हम सही मायनों में धरती पर जन्मे सबसे “बुद्धिमान” जीव है, आने वाले समय में यह “बुद्धिमान जीव” कहना कहीं व्यंग्य के भाँति ना प्रतीत हो!

“सामाजिक प्राणी की समाज से है आज दूरी ज़रूरी,

दुनिया एक अदृश्य, दुश्मन-भाँति जीवाणु से हारी।

परन्तु हमारे हौसले न होंगे कम,

मिट जाएगा जल्द ही विश्व का ये गम।

लॉकडाऊन के सभी नियमों का पालन है ज़रूरी,

यही होगी इस समय सच्ची देशभगति, ना समझे इसे मजबूरी”!

Name :Jahanvi Sharma Admno:V-2017-03-021

Year :3rd year, UG